ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 6, Issue 6,June 2016 Impact Factor 4.282 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका एवं समस्याएं

डॉ खेमचन्द गुर्जर
व्याख्याता
आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंध विभाग
एस.एन.के.पी. राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय नीमकाथाना (राजस्थान)

सार

सार्वजनिक क्षेत्र , जिसमें केंद्र और राज्य सरकार के स्वामित्व वाले उद्यम शामिल हैं, भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, देश के तीव्र औद्योगिकरण और समाजवादी लक्ष्यों की पूर्ति के लिए इनकी स्थापना की गई थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, सार्वजनिक क्षेत्र को "आधुनिक भारत के मंदिर" के रूप में देखा गया था, जिसका उद्देश्य न केवल आर्थिक विकास करना था, बल्कि क्षेत्रीय असमानता को कम करना और रोजगार सृजन करना भी था। सार्वजनिक क्षेत्र ने इस्पात, बिजली, कोयला, रेलवे और पेट्रोलियम जैसे पूंजी-गहन और दीर्घकालिक निवेश वाले क्षेत्रों में नेतृत्व किया। इन उद्योगों में निजी क्षेत्र के पास शुरुआती पूंजी और जोखिम लेने की क्षमता सीमित थी, इसलिए सार्वजनिक क्षेत्र ने देश के औद्योगिक आधार को स्थापित करने का काम किया। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को अक्सर देश के पिछड़े और दूरस्थ क्षेत्रों में स्थापित किया गया। इससे इन क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला, रोजगार के अवसर पैदा हुए और क्षेत्रीय असमानता को कम करने में मदद मिली। सार्वजनिक क्षेत्र देश में संगठित क्षेत्र के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक रहा है। इसने लाखों लोगों को स्थिर रोजगार प्रदान किया है, साथ ही सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी लाभ भी सुनिश्चित किए हैं। इन उद्यमों द्वारा अर्जित लाभ ने राष्ट्रीय पूंजी निर्माण में योगदान दिया। इसके अलावा, इन्होंने रक्षा और प्रौद्योगिकी जैसे सामरिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों को स्थिर रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेषकर संकट की स्थितियों में।

मुख्य शब्द

सार्वजनिक, क्षेत्र, राज्य, सरकार, अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

सार्वजनिक क्षेत्र से तात्पर्य उन उद्यमों, संगठनों और विभागों से है जिनका स्वामित्व, प्रबंधन और नियंत्रण सरकार द्वारा किया जाता है। एक मिश्रित अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में, सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका केवल लाभ कमाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास और न्याय को सुनिश्चित करने का एक प्रमुख साधन है। यह वह आधारशिला है जो निजी क्षेत्र के साथ मिलकर देश की प्रगति को सुनिश्चित करती है।

सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण योगदान देश के बुनियादी ढाँचे के निर्माण में रहा है। जिन क्षेत्रों में भारी पूंजी निवेश और लंबी परिपक्वता अवधि की आवश्यकता होती है, जैसे कि रेलवे, ऊर्जा, संचार, बंदरगाह और भारी उद्योग, वहाँ निजी क्षेत्र अक्सर प्रवेश करने से हिचकिचाता है। इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र ने निवेश करके देश की औद्योगिक नींव को मजबूत किया है, जो किसी भी आर्थिक विकास की पूर्व शर्त है।

सार्वजनिक क्षेत्र कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक है। यह सुनिश्चित करता है कि आवश्यक वस्तुएँ और सेवाएँ (जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से खाद्य आपूर्ति) समाज के गरीब और कमजोर वर्गों के लिए भी सस्ती दरों पर उपलब्ध हों। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियाँ अक्सर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अपने संयंत्र स्थापित करती हैं, जिससे क्षेत्रीय असमानताएँ कम होती हैं और उस क्षेत्र में रोजगार सृजन होता है।

सार्वजनिक क्षेत्र भारत में रोजगार का एक प्रमुख स्रोत रहा है। यह लाखों लोगों को स्थिर रोजगार प्रदान करता है। साथ ही, सार्वजनिक उपक्रम भारी मात्रा में पूंजी जुटाते हैं और इसे देश के उत्पादक क्षेत्रों में निवेश करते हैं, जिससे राष्ट्रीय पूंजी निर्माण की प्रक्रिया तेज होती है। इसके लाभ का उपयोग सरकार जनकल्याण योजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए भी करती है।

रक्षा उपकरण निर्माण, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों को निजी लाभ के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। इन संवेदनशील क्षेत्रों में देश की सुरक्षा और संप्रभुता सुनिश्चित करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की उपस्थिति अनिवार्य है। यह विदेशी शक्तियों पर निर्भरता कम करने और देश को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करता है।

सार्वजनिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक अपरिहार्य स्तंभ है। हालाँकि, इसकी दक्षता और प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए लगातार सुधार और आधुनिकीकरण की आवश्यकता है। वर्तमान दौर की

चुनौतियों का सामना करने के लिए, सार्वजनिक क्षेत्र को अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों को बनाए रखते हुए अधिक कुशल, प्रतिस्पर्धी और जवाबदेह बनना होगा। संक्षेप में, यह सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देने, क्षेत्रीय संतुलन बनाने और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ खड़ी हुई हैं, जो इसकी दक्षता और लाभप्रदता पर प्रश्न उठाती हैं:

अक्षमता और नौकरशाही: अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र में निर्णय लेने की प्रक्रिया धीमी और जटिल होती है, जो नौकरशाही की कार्यशैली से प्रभावित होती है। प्रतिस्पर्धा की कमी के कारण उत्पादन और सेवा की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

राजनीतिक हस्तक्षेप: सरकारी स्वामित्व के कारण इन उपक्रमों में अक्सर राजनीतिक और प्रशासनिक हस्तक्षेप होता है। यह हस्तक्षेप व्यावसायिक निर्णयों को प्रभावित करता है, जिससे वे आर्थिक तर्क के बजाय राजनीतिक आवश्यकताओं के आधार पर लिए जाते हैं।

अति-कर्मचारी और श्रम मुद्दे: कई सार्वजनिक क्षेत्र में कर्मचारियों की संख्या आवश्यकता से अधिक है (ओवरस्टाफिंग), जिससे परिचालन लागत बढ़ जाती है। साथ ही, कठोर श्रम कानूनों और ट्रेड यूनियन के दबाव के कारण आवश्यक सुधारों को लागू करना कठिन हो जाता है।

वित्तीय घाटा: कई उपक्रम लगातार घाटे में चल रहे हैं। ये घाटे सरकार पर वित्तीय बोझ डालते हैं, जिससे सार्वजनिक धन का उपयोग उत्पादक निवेश के बजाय इन घाटे को भरने में होता है।

तकनीकी अप्रचलन: उदारीकरण के युग में, कई सार्वजनिक क्षेत्र तकनीकी रूप से पिछड़ गए हैं। वे आधुनिक प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए आवश्यक नवाचार और आधुनिकीकरण को तेजी से नहीं अपना पाते।

साहित्य की समीक्षा

सार्वजनिक क्षेत्र किसी भी देश के आर्थिक और राजनीतिक आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक होता है। जब एक देश के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर सरकार का नियंत्रण होता है, तो यह विदेशी प्रभावों और पूंजीवादी ताकतों से स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है। भारत में सरकारी तेल कंपनियाँ, बिजली वितरण कंपनियाँ, और अन्य बुनियादी ढांचा सेवाएँ इस दिशा में एक अहम कदम हैं। इसके अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र का विकास देश को विदेशी बाजारों पर निर्भर होने से बचाता है और आंतरिक विकास को बढ़ावा देता है।

[1]

सरकारी संस्थाएँ उन क्षेत्रों में काम करती हैं, जहां निजी क्षेत्र की भागीदारी सीमित या अनुपस्थित होती है। यह सुनिश्चित करता है कि जो उपभोक्ता या नागरिक बाजारों से बाहर रह जाते हैं, उन्हें आवश्यक सेवाएँ मिल सकें। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा, और सार्वजनिक परिवहन ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ सरकार की पहल और नियंत्रण से ही सबको लाभ होता है, विशेषकर गरीब और पिछड़े वर्गों को। [2]

सार्वजनिक क्षेत्र सरकार को देश के विभिन्न उद्योगों और सेवाओं पर नियंत्रण रखने की सुविधा प्रदान करता है। यह बाजारों में प्रतिस्पर्धा को सुनिश्चित करने, कीमतों को नियंत्रित करने और समाज के हित में निर्णय लेने का अवसर देता है। सरकारी नियंत्रण के कारण, आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में अनावश्यक वृद्धि को रोका जा सकता है और देश की अर्थव्यवस्था में असंतुलन को नियंत्रित किया जा सकता है। [3]

सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका राष्ट्रीय सुरक्षा और संकट प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण होती है। युद्ध, प्राकृतिक आपदाएँ, या महामारी जैसी परिस्थितियों में सरकार द्वारा चलाए जाने वाले सार्वजनिक उपक्रमों और सेवाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण स्वरूप, भारत सरकार द्वारा कोरोना महामारी के दौरान स्वास्थ्य सुविधाएँ और आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गई। [4]

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका एवं समस्याएं

सार्वजनिक क्षेत्र, या सरकारी क्षेत्र, वह क्षेत्र है जिसमें राज्य या सरकार का नियंत्रण होता है। इसमें वे सभी संस्थाएँ, कंपनियाँ और सेवाएँ शामिल होती हैं, जो राज्य के स्वामित्व में होती हैं और राज्य के नियमन और प्रबंधन के तहत काम करती हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका और महत्व को समझने के लिए हमें इसके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है।

सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण कार्य देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना है। यह विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों, जैसे बिजली कंपनियाँ, रेलवे, सरकारी बैंक और सार्वजनिक सेवाएँ, के माध्यम से देश की आर्थिक संरचना का निर्माण करता है। यह न केवल रोजगार सृजन करता है, बल्कि बुनियादी ढांचे की आपूर्ति भी करता है, जो उद्योगों और व्यापारों के विकास के लिए आवश्यक है। उदाहरण के तौर पर, भारतीय रेलवे एक सार्वजनिक उपक्रम है जो न केवल लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता

है, बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों में व्यापार और परिवहन की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराता है।

सार्वजनिक क्षेत्र का एक और महत्वपूर्ण कार्य सामाजिक विकास में योगदान देना है। सरकारी संस्थाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक सुरक्षा जैसी सेवाएँ प्रदान करती हैं। ये सेवाएँ समाज के कमजोर और निर्धन वर्गों तक पहुंचने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं, जिससे सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सकता है।

सार्वजनिक क्षेत्र की यह भूमिका एक न्यायसंगत समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह सबको समान अवसर और सुविधाएँ प्रदान करता है।

सार्वजनिक क्षेत्र की कार्यप्रणाली को प्रभावित करने वाली प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं:

सार्वजनिक क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या इसकी आंतरिक अक्षमता है। निर्णय लेने की प्रक्रिया अत्यधिक जटिल, धीमी और स्तरित होती है, जिसे सामान्यतः "लाल फीताशाही" कहा जाता है। सख्त नियमों, प्रक्रियाओं और बहु-स्तरीय अनुमोदन के कारण परियोजनाओं के कार्यान्वयन में अनावश्यक विलंब होता है, जिससे लागत बढ़ जाती है और परियोजनाएँ समय पर पूरी नहीं हो पाती हैं। इसके अलावा, कर्मचारियों में जवाबदेही की कमी भी अक्सर देखी जाती है, क्योंकि उनका रोज़गार प्रदर्शन की बजाय पद की सुरक्षा पर अधिक निर्भर करता है।

कई सार्वजनिक उपक्रम लगातार घाटे में चल रहे हैं। ये उपक्रम अक्सर सरकार पर सब्सिडी का बोझ डालते हैं, जिससे राजकोषीय घाटा बढ़ता है। कम उत्पादकता का कारण पुरानी तकनीक, अतिरिक्त कर्मचारियों की भर्ती और प्रभावी कार्य संस्कृति का अभाव है। राजनीतिक दबाव के कारण कई सार्वजनिक क्षेत्र को सामाजिक उद्देश्यों (जैसे कम कीमत पर सेवाएं प्रदान करना) के लिए चलाया जाता है, जिससे उनकी लाभप्रदता प्रभावित होती है, लेकिन यह वित्तीय अस्थिरता का मुख्य कारण नहीं होना चाहिए।

सार्वजनिक क्षेत्र राजनीतिक हस्तक्षेप का शिकार रहा है। सरकारें अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र के रोज़मर्रा के संचालन, नियुक्तियों और निवेश निर्णयों में हस्तक्षेप करती हैं। उच्च पदों पर नियुक्तियाँ अक्सर योग्यता के बजाय राजनीतिक निकटता के आधार पर होती हैं, जिससे प्रबंधन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसके परिणामस्वरूप, सार्वजनिक क्षेत्र अपने व्यावसायिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय राजनीतिक एजेंडा पूरा करने में अधिक समय लगाते हैं, जिससे उनकी स्वायत्तता और व्यावसायिक

दक्षता खत्म हो जाती है।

कई सार्वजनिक उपक्रमों को उनके क्षेत्रों में एकाधिकार प्राप्त है। प्रतिस्पर्धा के अभाव में, नवाचार और तकनीकी उन्नयन के लिए कोई प्रेरणा नहीं रहती। वे बाज़ार की बदलती ज़रूरतों के प्रति धीमी प्रतिक्रिया देते हैं और अक्सर निजी क्षेत्र की तुलना में पुरानी तकनीक और कार्यप्रणाली का उपयोग करते हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र को वर्तमान परिदृश्य में निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है:

वैश्विक स्तर पर तेज़ी से हो रहे डिजिटलीकरण और तकनीकी परिवर्तनों के साथ कदम मिलाना सार्वजनिक क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है। पुरानी प्रणालियों और कर्मचारियों के तकनीकी प्रशिक्षण की कमी के कारण वे अक्सर नवीनतम तकनीकों (जैसे क्लाउड कंप्यूटिंग) को अपनाने में पीछे रह जाते हैं, जिससे सेवा वितरण की गति धीमी हो जाती है।

सार्वजनिक क्षेत्र के लिए प्रतिभाशाली और कुशल युवाओं को आकर्षित करना और उन्हें बनाए रखना कठिन होता जा रहा है। निजी क्षेत्र द्वारा दिए जाने वाले बेहतर वेतन, लचीलेपन और करियर के अवसरों के कारण, सार्वजनिक क्षेत्र अक्सर सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा खो देते हैं। इसके अलावा, यूनियनों (ट्रेड यूनियनों) का अत्यधिक प्रभाव भी प्रबंधन के लिए कई सुधारों को लागू करने में बाधा उत्पन्न करता है।

सरकारी उपक्रमों को कई विनियामक और कानूनी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। पर्यावरण मंजूरी, भूमि अधिग्रहण और विभिन्न सरकारी विभागों से अनुमोदन प्राप्त करने की जटिल प्रक्रियाएँ उनके विकास और विस्तार को रोकती हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अपरिहार्य है, विशेषकर सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए। हालाँकि, इसकी अंतर्निहित समस्याओं (जैसे अक्षमता, राजनीतिक हस्तक्षेप और वित्तीय घाटा) ने इसकी क्षमता को सीमित कर दिया है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सार्वजनिक उपक्रमों को अधिक स्वायत्तता देना, प्रदर्शन-आधारित प्रबंधन को लागू करना, प्रभावी विनिवेश नीतियाँ अपनाना और संचालन में पारदर्शिता लाना समय की मांग है। सार्वजनिक क्षेत्र के सफल भविष्य के लिए सरकार को एक नीति-निर्धारक और नियामक की भूमिका पर अधिक ध्यान केंद्रित करना होगा, बजाय इसके कि वह एक रोज़मर्रा के व्यावसायिक संचालक की भूमिका निभाए।

सार्वजनिक क्षेत्र के कई उपक्रमों में नौकरशाही की अधिकता और निर्णय लेने की धीमी प्रक्रिया देखी जाती है। इसके कारण योजनाओं का क्रियान्वयन समय पर नहीं हो पाता और संसाधनों की बर्बादी होती है। कई बार सरकारी उपक्रमों में नियुक्तियाँ और निर्णय राजनीतिक दबाव में लिए जाते हैं। इससे कार्यकुशलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और संस्थाओं की स्वायत्तता घट जाती है।

अधिकांश सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम लगातार घाटे में चल रहे हैं। इसका कारण है — लागत नियंत्रण की कमी, अनुचित मूल्य निर्धारण, उत्पादन में अक्षमता, तथा बाजार में प्रतिस्पर्धा का अभाव। निजी क्षेत्र की तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र में तकनीकी नवाचार और अनुसंधान पर कम ध्यान दिया जाता है। इससे उत्पादकता घटती है और उत्पादों की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

कर्मचारियों की अत्यधिक संख्या, काम में अनुशासन की कमी, तथा प्रशिक्षण के अभाव के कारण कार्यकुशलता में गिरावट आती है। कई बार यूनियनवाद के कारण निर्णय लेना भी कठिन हो जाता है। 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद निजी क्षेत्र और विदेशी कंपनियों की प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। ऐसे में सार्वजनिक क्षेत्र के लिए अपनी स्थिति मजबूत बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। कुछ सरकारी उपक्रमों में भ्रष्टाचार और अनियमितताओं के मामले सामने आते रहे हैं। इससे जनता का विश्वास घटता है और संसाधनों का दुरुपयोग होता है।

सार्वजनिक क्षेत्र देश की आर्थिक रीढ़ है, परंतु इसकी सफलता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब इसमें कार्यकुशलता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व लाया जाए। सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के बीच संतुलन स्थापित कर ही भारत एक सशक्त और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था के रूप में आगे बढ़ सकता है।

निष्कर्ष

सार्वजनिक क्षेत्र न केवल देश की आर्थिक नींव है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय सुरक्षा और सशक्त नागरिक समाज के निर्माण में भी सहायक होता है। सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाएँ और उपक्रम न केवल देश के विकास में सहायक हैं, बल्कि यह सुनिश्चित करते हैं कि विकास की प्रक्रिया हर नागरिक तक पहुंचे और समाज में समानता और न्याय कायम रहे। इसलिए, सार्वजनिक क्षेत्र का महत्व भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में अत्यधिक है, और इसके संवर्धन और विकास की दिशा में निरंतर प्रयास होते रहने चाहिए। सार्वजनिक क्षेत्र भारत के आर्थिक इतिहास का एक अभिन्न अंग रहा है और आज भी कई प्रमुख क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। हालाँकि, बदलते वैश्विक और घरेलू परिदृश्य में, सार्वजनिक क्षेत्र के

लिए अपनी प्रासंगिकता बनाए रखना आवश्यक है। सरकार द्वारा विनिवेश, रणनीतिक बिक्री और प्रबंधन में स्वायत्तता जैसे सुधारों के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र को आर्थिक रूप से व्यवहार्य, कुशल और जवाबदेह बनाने के निरंतर प्रयास ही यह सुनिश्चित करेंगे कि वे भविष्य में भी देश की प्रगति में सकारात्मक योगदान देते रहें।

संदर्भ

मिश्र, आर. एन. — भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का विकास। नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन, 2012

दत्त, आर. एवं सुंदरम, के. पी. एम. — भारतीय अर्थव्यवस्था। नई दिल्ली: एस. चाँद एंड कंपनी, नवीनतम संस्करण,2011

मिश्रा, एस. के. एवं पुरोहित, वी. के. — इंडियन इकॉनॉमी: पॉलिसीज़, परफॉर्मेंस एंड रिफॉर्म्स। नई दिल्ली: हिमालय पब्लिशिंग हाउस, 2010

अहूजा, एच. एल. — इंडियन इकॉनॉमी। नई दिल्ली: एस. चाँद पब्लिशर्स, 2011

अग्रवाल, एम. आर. — पब्लिक सेक्टर इन इंडिया: रोल एंड परफॉर्मेंस। नई दिल्ली: डीप एंड डीप पब्लिकेशन्स, 2014

शर्मा, आर. के. — "भारतीय अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका।" इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, खंड 65, अंक 2, 2014

गुप्ता, ए. — "भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के सुधार और चुनौतियाँ।" इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 2015

सेन, ए. — "भारत में सार्वजनिक उद्यम: समस्याएँ और संभावनाएँ।" जर्नल ऑफ इकोनॉमिक डेवलपमेंट स्टडीज़, 2012